

श्रीर

नमो भगवते वासुदेवाय

ASHA ARCHIVES

1.234

ASHA ARCHIVES

श्रीप्रसोपायामनेनमः। शरीरं मू
र्धा रोम केश ललाट चक्षुः श्रोत्र नासिका
मुख आस्य चिबुक गण्ड कण्ठ ग्रीव हस्त
पाद अंगुलि उदर वाङ्मूल कटि पुरु
श्च मसलक तलु बाल नयन लोचन नेत्र
ईक्षरा अज दो कक्ष चक्षुः उर वक्ष
पृष्ठ कृष्णि जठर पार्श्व मध्यम वक्षि ना
भिनिनय मुक्ष शिश्न मेध्र यत्फ गा
त्र वक्षु विग्रह काय देह अस्थि अङ्ग
मांस पिणित पलल तरल आमिष रु
क् घोरणा नासा तालु ओष्ठ भ्रुक मांस
रुधिर क्रोड नख कर्ण जिह्वा शिश्नु शा
वक शुवा दन्त शिरु जिह्वा मूल ललना
रुमना रुसजा हनुपद अङ्गि चरणा द
क्षिणा वाम आयत दीर्घ ह्रस्व लघु गुरु

गुडधार पिचलु कुच अक्षि अक्षिणी द
ष्टि दृक् भग योनि कुक्षर हृदय चित्त
मानस मन स्वान हृत् चेतस् अश्रु अं
गुष्ठ तर्जनी मध्यमा अनामिका कनिष्ठा
रक्षस देव असुर नर दैत्य देवी नारी
भार्या दारा जाया कलत्र स्वेद मज मू
त्र विष्ठा सिंहारा आश्रु श्लेष्म हृषिका
कर्ण विद् मज्जा मेद बाल वसन हृदि
हिका भास वायु अग्निनिःश्वस पूति
मन्ध सुगन्ध दुर्गन्ध निद्रा तन्द्रा स्वप्न व्रण
शयन मक्षिका चौर तस्कर स्तन कस्तूरु
जल आप पृथ्वी आकाश तारा चन्द्रमा
चक्र सूर्य वेद्य वृष्टि वर्ष रश्मिदण्ड न
नित गर्जित विपुत्र तडित् सोदामिना व
प्रपात आसार शीकर अत्र यथ गन्ध

वं किन्नर भूत प्रेत पिशाच नाग विष्णुधर
 यंत्र मंत्र पुस्तक लेखनी मसी अक्षर व
 र्ग लिपि चारु सुन्दर आगत नहि आग
 त आगच्छति नहि आगच्छति श्मश्रु ओ
 षधी रक्त लोहित सित अवदात शुक्ल
 हरित पीत गौर नील कृष्ण श्याम धूम्र
 शबल चित्र विमान सिंह हरि व्याघ्र न
 रसु क्रैश्च भल्लुक पक्षि आकाशचर
 जलचर दध्वाचर महिष मर्कट वानर की
 शं विडाल बक भुविक संमार्जनी शस्त्र अ
 स्त्र सूत्र डमरु चक्र पाषाण शिला गिरि
 शैल भेषक मातृ अश्व हर्म्य वर्णाश्व रथ
 अजा नुरग अश्व हय गज हस्ति द्विप
 करि चषक तमाखु अवदान पुराण इ
 तिहास स्वर व्यंजन हलवर्ण मयन द्वार

गृह वेस्म गेह सप्त निकेतन कपिल पिंग
 ल एडका सदन भवन अगार मन्दिर क्षि
 प्र पुष्प धूप दीप नैवेद्य पारावत कपोत
 चतक कलविक माता अम्बा वैमातृ जन
 नी भगिनी भ्रातृ ज्येष्ठ भ्रातृ कनिष्ठ भ्रा
 तृ ज्येष्ठ भगिनी कनिष्ठ भगिनी अनुज
 सुषा पिता **जनक** स्त्री योषित् अवला
 वधू पितामह पितामही मातुल मातुला
 नी मातुली भागिनेय पितृव्य श्वशुर
 श्वश्रु पितरौ श्वशुरौ पुत्र आत्मज सुत
 इहिता अपत्य पौत्र पोत्री जामाता केक
 र खण्ड कुञ्ज महा सप्तवली शुद्ध नि
 र्वली कुर्मकच्छप मत्स्य गीम वृश्चिक कर्म
 क मकर भेक मण्डक सुवति माता पत
 ति स्वादति भक्षति चरवाक गच्छति नग

च्छति निमिष अनिमिष दर्शन जंभरा मू
 त्रत्याग मलत्याग कुरु माकुरु मागच्छ अ
 त्रतिष्ठ उपरि अधो वहिर् वाह्ये अन्तर
 मार्जाल काक वायस यक्ष गरुड आता
 यी शुक्र शारीक चातक वज्र कुलिश य
 ण्खवाङ्ग पात्र भूषण कंकन बलय नो
 पुर रुरा रुरा कुण्डल मङ्गल क्षुद्रग्रहि
 का मेखला अंगुलीयक रूपक कार्पा प
 रा अग्नि नासि कुत्र शर्कर गड ह्यहं द
 री आरु विष अमृत सुधा रज्जु कपि
 लपिशङ्ग कपि गर्दभ रासभ भृगाल
 क्रौञ्च फेरु जलुक धात्री दाडिम विल्व
 हरीतकी श्रेष्ठ उत्तम वर प्रवर आर्य
 तेज ज्योति रश्मि हवि प्रभा वादन शरव
 धमन कास आय अयस् मूल शरवा

पत्र अंकुर पद्म उत्पल नीलोत्पल स्कन्ध
 केशर करीका मकरन्द पचति त्वं अहं छा
 ग वृष गौ धेनु ह्यन ध्वज पताक विमान
 चामल नृत्य गीत नर्तन गायन दंपति जं
 पति चंचु श्वान श्वनी कुक्कुर परिवारस्थ
 विर वृद्ध तरुण तरुणी वृद्धा कुमार कु
 मारी कन्या कानीन अणु सूप अद्रुप पू
 प हंस खट्वा शय्या चपेट पिंजर वस्त्र वा
 स काश मधुपिंगल वधिर शिखा चूडा
 कवरी केशवेश अलका खोड खञ्ज उ
 पचार पायस क्षीर तक्र नवनीत दधि
 अन्न शाक घृत तैल काष्ठ दारु इन्धन
 भाजन लवण कड आम्र कषाय मधुर
 तिक्त हरिद्रा लसुन आम्र पलाणु जीर
 क गरिष्ठ फल पनस उभा चूत ताशूल

४०
 प्रग. दक्षिणा. क्षम. सिद्धर. माल्य. र. सधा
 उ. सुवर्ण. हिरण्य. रूप. ताञ्ज. रीति. वज्र.
 मारिक्य. धुम्पराग. प्रवाल. नील. मुक्ता.
 चैत्य. धर्मधातु. देवालय. प्रासाद. भट्टा.
 रक्त. जंघा. तारका. कयक्ष. ऋतु. कुटिल.
 वक्र. पर्वत. नग. सागर. समुद्र. नदी. तडा.
 ग. पुष्करिणी. सर. वापी. रूप. वृक्ष. पादप.
 मण्डप. प्रणाली. अश्वि. यमाकर. पुरुरीक.
 अम्भोज. मालती. जाति. चंपक. लता. ताल.
 वृक्ष. प्रपात. भद्र. निर्झर. शब्द. ध्वनि. नाद.
 रव. यव. तरुण. चिपिट. धान्य. त्रीहि. गो.
 धूम. मसूर. चराक. कुलान. कुलशब्द. ध्व.
 तनूतुल. क्षुण्णतुल. कुष्माण्ड. मुद्ग. मा.
 प्र. ओदन. राजहंस. चक्रवाक. कोकिल.
 पिक. रक्तप. जलोका. शम्भूक. मही. वता.

४१
 चलति. नचलति. गर्भवती. वलवान्. उर्व.
 ल. वामन. आशु. भिन्न. दुत. तूर्य. विल.
 य. अलस. आलस्य. स्पर्श. मास्पर्श. सुखा.
 द. स्वादशीत. नतिष्ठ. भाड. अलक्षणा. कु.
 लक्षणा. कुलक्षणा. चन्दन. लेपन. तिल.
 क. अंजन. अलक्तक. व्यक्त. प्रकट. प्रम.
 क्त. असुर. अव्यक्त. मूर्ख. वाल. अज्ञा.
 नी. धीर. ज्ञानी. पक्ष. पुच्छ. आनय. रोचते.
 नरोचते. तृण. शाकल. भय. भीति. माभैर.
 हास्य. रोदन. अह. हास. महाहास. स्मित. ई.
 ष. हसित. उद्य. शीत. शीतल. ताप. क्रोध.
 मंदोद्य. तिग्म. तीक्ष्ण. खर. मरीचि. का.
 वर्ष. सम्यक्स. रायन. मास. पक्ष. दिन. प्र.
 भात. मध्याह्न. सायं. रजनी. निशि. रात्रि.
 क्षमा. प्रान्त. अर्द्धरात्रि. अश्व. तस. भ.

परश्वः इदानीं सांप्रतं तदा यदा कदा
 सदा सर्वदा यत् तत् किं कदे हि मत्पदे
 हि तुषार हिमजड अक्ष मूक वक्ता श्रो
 ता एतत् कार्य शिल्प कृषि स्वर्णकार ता
 म्रकार लोहकार नापित भिषक् चिकित्स
 क आरु रोगी ज्योतिष देवज्ञ राजा अ
 मात्य सैन्य भय योधा रक्षक ज्ञाता सुहृ
 त मित्र अरि द्विष शत्रु रिपु याचना या
 चन शासन ताडन भर्त्सन पाचन लाज
 अक्षत उर्व उर्व कृषु वधक मन्दार क
 वल छाया एकदा एतस्मिन्काले अभ्य
 यन पठन धारणा वाचन लिखन कथन
 भक्षणा अदन इति वर्तमाने तत्क्षक पल
 गरु सूपकार हंशिका क्षव अयस्कार अ
 निसार विसृचिका विस्फोट रंगाजीव चि

त्रकार नखच्छेद चूडाकर्म अनप्राशन विवा
 ह उपनय चिकित्सा मृत मृत्यु निधन प्र
 लय मरणा नाश रोग व्याधि गद रज क
 गणाका स्वकीय परकीय परद्रव्य स्व पर
 आत्म आत्मीय बु भक्षित जिघत्सित नृषि
 त भर्ता पति स्वामी धर्मशा धावन सिंचन
 दहन भेदन मारण धर्षण क्रोध अहंकार
 अविद्या कोप स्वर्धा उत्पित्वा स्थित्वा स्ना
 त्वा भुक्त्वा पीत्वा गत्वा नत्वा प्रणाम्य परा
 दत्त पठित्वा लिखित्वा ग्राह्य गृहीत्वा दत्त्वा
 कर्पास नय दिगम्बर उद्ध उद्धुक श्पेन
 पुत्रिका पुनर् पुनः पुनः भूयस् सततं वि
 रनारुं किंचित् अल्प किंचिन्मात्र वज्र अ
 धिक अधिकतर कदाचित् जीत अर्ध लं
 घन आक्रान्त क्रम परिक्रम अतिक्रम

अतिक्रान्त सार्धं समं सह अन्तिक निक्क
 ट समीप दूर आह्वान प्राप्नोति नप्राप्नो
 ति कथं यथा तथा अभाव विनाश आप्त
 प्राप्त नश्व उल्लभ सुलभ दिष्ट भाग धेय
 हेतु बीज निदान क्षेत्र भयानक भयंकर
 शान्त श्मशान पीठ कंकाल निभ सन्निभ
 सदृश आदृश तादृश एतादृश त्वादृश
 मादृश कीडा धूत अक्षा पाश भीम दिशा
 पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर विदिशा कोरा
 अग्नि नैर्ऋत्य वायुव्य ईशान अग्र संमुख
 वक्त्र चरम पश्चात् आदि पुरु इतस्ततः भ्र
 मरा शंका संदेह संशय लब्धा इच्छा वां
 द्या नम हारित मयूर पलायित केवल सु
 दृक् प्रसूत गच्छामि नगच्छामि मूल ऊ
 सुम उदक वारि पाणि पानीय गुणवर्ति

ब्रज मान्नज गारु दृढ अगाध गंभीर सर्व सं
 पूर्ण अर्ध अखण्ड चतुष्पथ चतुःखण्ड
 त्रिखण्ड आख्य अभिधान नामधेय चक्र
 मरा पाउका उमानह भस्त्रा अग्निकरा अ
 ग्निवाला शिखा सुस्निग्ध गहन कानन
 अरण्य विपिन वन अटवी आराम अ
 नः पुर रसातल पाताल शठ वाचाल धृ
 र्त्वं चक उन्नत उन्नतिनी अस्वाध्याय
 मत्सरी नौ तरणि नाव धीवर कैवर्त्त जान
 वडिश वायुरिक वायुरा सहाय सखि स
 खा कल्याण मित्र यः सः असौ भदन्त भ
 वान् आयुमान् आयु अवधि उवाच ज
 गाद अवोचीत् आह विललाप मारोदसि
 अवधीरय क्षान्ति मर्म अक्षान्ति अमर्ष
 स्पृहा काम अभिलाष लालस अभ आ

॥१०॥
 लिंगन च चन अपराजित विंड शास्त्र वि
 या कवि पण्डित मेधावी विद्वान् सुधी केवि
 द बुध ज्ञाता मया एवं श्रुतं कर्णधार
 नाविक बीज पूरु दमनराष्ट्र राज्य लेश
 राग द्वेष मोह माया दम्भ असूया पैशून्य
 पारुष्य अदत्तादान संभिन्न प्रलाप प्रा
 णानिघात काममिथ्या मृषावाद मिथ्याद
 धि व्यापाद आशा लोलुभ लुब्धक लज्जा
 ही क्षपा करुणा दया अनुकंपा पुरस्
 र विद्वान् भुव मेत्री करुणा सुदिता उ
 पेक्षा स्वभाव सर्ग वेदभू विस्मय अद्भुत
 आश्चर्य भक्तं सुवराज भट्टदारिका
 शील सहन विपरीत त्याग मणि पाप ध
 र्म सुराप अद्य अमृत्य अनघ ओद्य स
 मुदाय राशि पक्ति चित्र विचित्र काल

वेला समय यत्किंचित् देवेन्द्र शक्र मघ
 वान् इन्द्र पुरहूत वासव सुरपति शची
 पति शची मृग वृक वराह शृकर कोल
 पण्य कुशीद वृत्ति मार्ग पथ अध्व सम
 मार्ग विषममार्ग सेतु सेतुवध्व मोक्ष
 निर्वाण मुक्ति जन्म जनन जाति ब्रह्मक्ष
 त्रि वैश्य शूद्र शाक्यवंश वज्राचार्य पि
ण्डपात्र अर्घ्य पाश आचमन आसन व
 ज्रपर्यङ्क गुप्त गुप्त प्रकाश आच्छादन
 आकार स्वरूप आकृति स्वभाव प्रत्यक्ष
 परोक्ष इह त्र परत्र यम धर्मराज कृता
 न यमराट् काल कुराप मृतक भोज्य सा
 धन सामग्री इदं काम वाक् चित्त प्रति
 विम्ब सम करण क शुद्ध निर्मल कलुष
 क्लिष्टिष अद्य उद्धत इति धर्म श्रेयस्

(८) (८)
 वृष सुकृत प्रीति अम्रीति प्रिय अम्रिय
 आनन्द सुख कल्याण मंगल शिव भद्र
 भव्य कुशल क्षेम भक्ति भावना ध्यान स
 माधि अपवर्ग अपाय नित्य उर्गति ता
 भ सत्कार मान्य यश कीर्ति वन्दना पूजा
 गुण जीवित सर्वसत्त्व उत्पत्ति उद्भव सि
 धि वाक्प सिद्धवाक्प सत्य तथ्य वितथ
 अचत हुरा पश्य मां दिव्य चक्षु बालुका
 सिकता वेशु शर नड कीचक एकहस्त
 वितस्ति अंजलि कृतंजलि पूर्वनिवासा
 नुस्मृति जातिस्मर भव संसार समुत्तरा
 अलंकृत जानामि न जानामि किं करोमि
 कगच्छामि विकार अपकार अपराध
 सिद्ध असिद्ध समाप्त आख्यात उक्त
 प्रलपित भूषित दत्तवान् गतवान् का

रितवान् मृड कोमल कर्कश खर्व मृड
 तैल तिलतैल कुसुमतैल कस्तूर मृग
 नाभि मृगमद कंकोला श्रीखण्ड चन्दन
 कर्पूर सिंहु अलुरु कल्याणरु रत्ना
 चन्दन शीत सुता सुकृत कील कील
 न आकोटन छोटिका अंगुलिस्फेदन
 व्यर्थ अर्थ अनर्थ धूम आरोहण शोध
 न शोचन द्रव्य विलाप द्रव्य परिदेवन
 विरोध सुप्रताप सुवचन संकेत शोष
 ण अभिदाह अभिषेक दीक्षा मण्डप
 गोमय गोमूत्र भेद स्नान कल्पना चिन्ता
 चिन्तना कर्तरी कुठार परशु संतोषी
 असंतोषी दरिद्र निर्धन आद्य महाधन
 धनाय विध नानाविध नाना प्रकार नाना
 विना इदं काव श्राप शपथ सत्य प्रश्न

पृथ्वी प्रतिवाक्य ध्रुव शाश्वत अनित्य अ
 ध्रुव अनुग अधिपति सत्त्व प्राणी असृक्
 पुरुष आराधन उच्चारण निश्चाय त आ
 राधयत् इमंति इश्चिन इर्वद्धि ऊर्वद्धि
 ऊमति सुमति सुकृति सुकर्म ऊकर्म ऊ
 अनु कदन अश्वत्थ पिप्पल वोधिद्रुम
 वोधिदृष्ट ज्ञक्ष वट कट सुद्ध संग्राम र
 रा धनु वारा मोदक यवाय वर्तुल मधु
 इक्षु सर्वज्ञ सुगत बुद्ध धर्मराज तथागत
 समन्तभद्र भगवान् मारजित् लोकजित्
 जिन षडभिज्ञ दशबल अक्षयवादी विना
 यक सुनीत्र श्रीघन शास्ता सुनि शाक्यसु
 नि शाक्यसिंह सर्वार्थसिद्ध शोद्धोदनि गो
 तम अर्कवन्त मायादेवीसुत ब्रह्मा आत्म
 भू सुरज्येष्ठ परमेश्वर पितामह हिरण्यग

र्भ लोकेश स्वयंभू चतुरानन धाता अ
 ङ्ग इन्द्रिण विरिञ्चि कमलासन स्त्रष्टा
 प्रजापति वेधा विधाता विश्वसृड् विधि
 विद्यु नारायण कृष्ण वैकुण्ठ विष्टरश्र
 वा दामोदर हृषीकेश केशव माधव स्व
 भू दैत्यारि पुरुरीकाक्ष गोविन्द गरुड
 ध्वज पीताम्बर अच्युत शाङ्गी विघ्नहर्ता
 न जनार्दन उपेन्द्र इन्द्रावरज चक्रपा
 णि चतुर्भुज मधनाभ मधुरिपु वासु
 देव त्रिविक्रम देवकीनन्दन शौरि श्री
 पति पुरुषोत्तम वनमाली बलिध्वंसी
 कंसारानि अधोक्षज विश्वंभर केटभजि
 त् विधु श्रीवत्सलांछन पुराणा पुरुष
 यज्ञ पुरुष नरकान्तक जलशायी वि
 श्वरूप मुकुन्द सुरमर्दन वसुदेव आ

नकडुभि वलभद्र प्रलम्बघ्न वलदेव
 अत्युताग्रज रेवतीरमण राम कामपाल
 हलाशुध नीलाश्वर रौहिण्य ताताक
 सुसती हती संकर्षण सीरपाणि कालि
 न्दीभेदन वल मदन मन्मथ भार प्रद्यु
 म्ब मीनकेतन कन्दर्प दर्पक अनङ्क
 काम पञ्चरार स्मर सञ्चरारि मनसि
 ज कुसुमेषु अनन्यज पुष्पधन्वारि
 पति मकरध्वज आत्मभू ब्रह्मसू ऋ
 षकेतु अनिरुद्ध उषापति लक्ष्मी
 पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरिप्रिया
 शन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया
 रमा कान्चन पानीय किमिदं शृणु वा
 नीं शृणु मद मान दर्प विगत अस्माकं
 तव मन आसीत् अभूत् वभूव भू

शोति नश्वरोति हितं वाक्यं प्रकुप्यन्ति वा
 रयन्ति इदं किं प्रयोजनं पति स्वामी अने
 षण गवेषण मार्गण निर्गत निष्क्रान्त
 प्रविशति विशति प्रविवेश कीडार्थं अ
 नुभाव प्रभाव वीर्य ऋद्धि पराक्रम वा
 नीं न करोति सूची यथन एकसूत्रे हि
 लमोदिका तुंविका नारिकेल कर्कटी घ
 टी दारुण रौद्र उग्र शिविका यान आ
 रोप्य आवरण प्रावरण आरुह्य वहन
 नदीप्रवाह भिदर सुहृद अथ खलु अ
 न्य अन्त्यमर इतर प्रदक्षिणी कृत्य त्रिप्र
 दक्षिणी कृत्य जालुभ्या भूतलेधत्वा शि
 रसावहन् उद्धहन्नुजरासंगं आदेश आ
 ज्ञा शिक्षा शासन जन्म जरा व्याधि म
 त्तु निश्चय निधन वैहि पुनः पुनः वा

अथवा अती शरः दारपाल इत दास दाः
 सी शशरवरः कर्मकरः भृत्य उत्तम मध्य
 म अधम शुभ अशुभ उपस्थित आ
 जगाम आयात उपसंक्रान्त उपसंक्र
 म्पादो वन्दित्वा इदं वचनमब्रवीत् वि
 षाणा भृगु हरीतकी कणुकारी राजवृ
 क्ष विडङ्ग लवङ्ग त्वच त्वकपत्र जाति
 सुकम्पाल लाक्षा पेलव पिरल वनसा
 न्न इत्याह तद्यथा स्थायधेदं तपास्तु
 एक दश शत सहस्र अशुत निशुत द
 शलक्ष कोटि रज पाञ्चरेण धूली अवा
 किरन् आपरा क्रय विक्रय प्रसारित
 दंशी दशति नमामि नमो नमे प्रणमामि
 नमस्ते नमः नमोनमः त्वक् चर्म चर्मणि
 उत्पातिते क्रिमि नवीन नूतन नव अभि

नव पुराणा पुरातन चिरंतन चिरं किंचि
 त् मनाक् ईषत् तूष्णी तूष्णीका मौन
 सद्य तूष्णीभाव मौनभाव शूल त्रिशूल
 असि खड्ग पिप्पली शुराठी कानार म
 धुयष्टिका उर्गम क्रोश अर्द्ध निर्मल
 स्वच्छ अनाविल आविल जय सय सं
 गम समागम अचिरं चिरं जीर्ण शीर्ण
 अपक्व पक्व नमस्तु आसत वन्धन वन्ध
 नागार कारागार सूतिका सूतिकाग्रह
 दोहदवती शुर्विणी उन्नत मौन शिथि
 ल सौभाग्य भाग्यमानी उर्भग उर्भाग्य
 मन्दभाग्य धिक् २ अधकार धान्त तम
 उज्ज्वल निधि भण्डागार अभाग्य कान
 र मनसिकार नश्यति सच्च निम्न तम
 उन्नत तुला मिथुन शुक्ल शुक्ल कुंभ

घटः सैषः सः एषः आकरः कुंभकारः अभि
मुखः संवोधनः पराङ्मुखः उर्ध्वमुखः खमुखः
खगः व्यग्रगर्भावासः शैशवेः बाल्येः तारुणे
यौवनेः वार्द्धकेः महदुःखः महत्सुखः पलितः
वक्रगतिः तिर्यग्गतिः प्राचीनः भिदिः कुट्टि
मः कोष्ठः कोष्ठागारः कोषपाकः अपाकः अ
धोमुखः मीलनः बोधनः बुध्यतिः न बुध्यतिः
भृंगारः आलुः स्थातीः धुरः एकधुरः पोतः या
नपात्रः नपुंसकः लीवः दंष्ट्रः स्फुरेत् मञ्ज
रिः तालः ऊर्ध्वः मृदंगः वीणाः वेणुः वंशः ठ
क्काः पटहः भेरीः तूर्यः प्रचोदितः चोदनः सं
चोदनः ददाति गृह्णाति गृह्णति तोरणः स
म्भः ददाति भस्म विहरति स्म पुञ्जः कूटः
शिरवरः काहलः संतापमलः आतंकपञ्चा
तापः विप्रतीसारः अलुतापः उन्मादः चि

तविभ्रमः विश्वासः विश्रम्भः आगः स्नेहः म
नोरथः अभिलाषः नासः विन्यासः प्रतिमा
क्षालनः प्रक्षालनः अशनः वसनः विरूपः
कुरूपः सुरूपः अलंः अखिलः कृत्स्नः तद्व
त् यद्वत् कः इवः पिक इव काकवत् या
वत् तावत् चणुः अत्यन्तकोपनः स्वस्वभ
र्ता सोपि नित्यः अभ्यासः मृद् मृत्तिका म
त्सा क्षारमृत्तिका पंक निमग्नः क्षारः सका
रः पिङ्गलमृत्तिका पीनसः अर्शः विडङ्गः
सिन्धुः सैधवः पूयप्रवाहः पटलः अध्यायः
व्यतिरेकः संभोगः तत्परः शक्नोमि शक्न
ते न शक्नते तर्कः वितर्कः संकल्पः विकल्प
भोगः क्वचित् स्थावरः जंगमः स्थलः विज
हारः नारकः तिर्यक् वस्तु विघ्नः अनारा
यः श्रृंखला स्फोटः आवेशः प्रवेशः ॥

श्रीप्रज्ञो पाययोः शरणां गच्छामि कुत्र ग
 च्छामि ग्रामं गच्छामि त्वं ह किं कृत्वा तिष्ठ
 सि स्नात्वा तिष्ठामि हे कमललोचने त्वत्तः
 पानीयं पातुमिच्छामि तव पिता कुत्र गतः
 शंख सुन्दर स्पृष्ट हे गतः तत्र किं कार्यमस्ति
 कार्यं तु किमपि नास्ति तथापि सहायत्वा
 त् प्रतिदिनं एकवारं द्वि निखन स म्भन
 जम्भन भूकंप चतुष्पथ भृंगाटक मयू
 रपिच्छ वलि मार्जन अपमार्जन कोला
 हल कल्लोल तरंग उर्मि कण्डु पिपीलि
 का लोल विलोल विलोल तर चंचल द
 ष्टिपात दग्ध मथ्य सुरा वारुणा वेष्टन
 परिवेष्टन विकसन फुल्ल प्रफुल्ल वि
 बुद्ध पूर्णा पूर्णा पात्र दंष्ट्रा कराल सम
 धार कुल किमर्थं सभा समिति साधु

धन्य दण्ड लघुदं अंजश कशा अश्वा
 रोह क्षरा मुहूर्त रुटिति एकक्षरा पल
 विपल कला अंश वर्ग क्षत्रिवर्ग पर्वतः
 निश्चल न संशय कीदृशी निरोध निवार
 रा औषध भेषज शकट भार भारवाहक
 कटक वल्कल त्वच तप्त मण्ड शाल्मली
 प्रमेह भगन्दर कुष्ठ खदिर भृंगराज तंग
 राज लेपन पिष्टा निघृष्ट वशीकरणा ना
 गकेशर रूपकेशर गुणुल अर्जन रक्ष
 रा विनाश अनन्त अवैरि जानीहि धन
 शक्तमति अवसर नावसर विमुक्तैः न
 श्पतु सुखीभव लक्ष्मीस्थिरोभव धत्तु
 विसर्जन सत् असत् सोमया युनोति म
 यं पिवति कारुण्य दूरी दूरीत सोपान
 निःश्रेणि सोपानफलक भिक्षु श्रावक

शारिङ्गमौञ्जलपान अनिरुद्धदूराः
 सुभूति आनन्दराजल काश्यप गयाका
 शपप नदीकाश्यप उरुवित्वाकाश्यप भि
 शुशी उपासक उपासिका व्रती तपस्वी
 तपसः सूप उर्वोध गभस्तिमाता खेला
 संचरान पिष्ट उरुकोशात् भूविवरात्
 उल्मीष स्थिर द्विस्वभाव भंग षड्पद अ
 लि शतपदी खद्योत स्वच्छन्द स्वच्छन्दचा
 री स्वाधीन स्वतंत्र परतंत्र पराधीन होम
 यज्ञ अधर मख क्रतु पाठ धारणी महाया
 नसूत्र दृष्ट पुष्ट ग्लानी त्रिकोण चतुर
 स वर्तुल खिन्नक्लिष्ट उद्विग्न आयास
 अनायास निर्मित कृत्तिम अनिर्मित गुरु
 अणुजा स्वेदजा जराणुजा औपमाडका
 वतुयोनि पयो ववौ जगौ ददौ जगाद

वशिष् वासिज्य ज्ञेय देय पेय खाद्य चो
 ष्य लेख भोज्य समर्थ शक्ति यथो देवद
 नीय दक्षराजीय इष चिकीर्षन्ति पिप
 ठिषति जिगमिषति कृहति व्यतिलुनीते
 व्यतिगच्छन्ति व्यतिघ्नन्ति पुत्रकाम्पति पु
 त्रकाम्यांचकार पुत्रीयति केशकेशी दण्ड
 दण्डी शाकपार्थिव जीवमत्स्य जीवदेवत्रा
 ह्मणा उप उपाध्याय आचार्य आचार्यशी
 जहो उल्का हेला निखुर परुष ग्राम्य यात्रा
 दण्डी निगड क्षुरकर्म तस्थो द्विगुण त्रिगु
 ण एकधा द्विधा त्रिधा षोडश समास निर्ण
 य भाषा जिज्ञासा छल कुतूहल कोतुक
 कर्ता हर्ता गता दाता सृष्टि पृथक् पृथक्
 भिन्न मत्त सुप्ता नय नयति मर्कट अहि
 सर्प भुजंग बाल उरग पन्नग फण गर

लक्ष्मि-कालकूप-विषवैद्य-जंगलिक-व्या-
 लयाही-अहिरुणिक-वैतरणी-ग्राह-वात-
 पित्त-श्लेष्म-कफ-संनिपात-ग्रह-आदित्य-
 चक्र-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-
 श्वर-राज-केतु-ज्वर-अरोचक-गतगण-
 गण-माता-शोठ-विषमज्वर-तिथि-प्रतिप-
 दा-द्वितीया-तृतीया-चतुर्थी-पंचमी-षष्ठी-
 सप्तमी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-
 द्वादशी-त्रयोदशी-चतुर्दशी-पूर्णिमासी-अ-
 मावास्या-नक्षत्र-अश्विनी-भरणी-कृत्तिका-
 रोहिणी-मृगशिरा-आर्द्रा-पुनर्वसु-तिष्य-
 अश्लेषा-मघा-पूर्वफाल्गुनी-उत्तरफाल्गुनी-
 हस्ता-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-ज्ये-
 ष्ठा-मूल-पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा-अभिजित्-
 श्रवणा-धनिष्ठा-शतभिषा-पूर्वभद्र-उत्तर

भद्र-रेवती-योग-विष्णु-प्रीति-आयुष्मान्-
 सौभाग्य-शोभन-अतिगण-सुकर्मा-धृति-
 श्रुत-गण-वृद्धि-ध्रुव-शुक्र-व्याघात-हर्षण-
 वज्र-सिद्धि-व्यतीपात-वलीयान्-परिध-शिव-
 सिद्धि-साध्य-शुभ-शुक्ल-व्रत-ऐन्द्र-वैधृति-
 वार-करणा-राशि-ओजोहार-शकुनि-यम-
 दत्त-किंकर-भवति-एधते-स्पन्दते-गाधते-वा-
 धते-नाथते-नाधते-दधते-सुन्दते-वन्दते-
 भन्दते-मन्दते-स्पन्दते-क्लिन्दते-मोदते-दद-
 ते-स्वदते-उदते-कूदते-गूदते-गोदते-सू-
 दते-हृदते-हृदते-पदते-यतते-दादशरा-
 शयः-मेष-वृष-मिथुन-कर्कट-सिंह-कन्या-
 तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुंभ-मीन-कुत्सा-
 यंत्रालय-विद्यार्थी-उर्ध्व-गामी-न-सुख-तस्या-
 सः-नपठति-तेत्वय्याधावन्ति-यूयंसुखपठ

थ न कीमि वयं निता न न कीडामः सः त्व
 रया पठति ते कसंति खलि पू यं त्वरया गच्छ
 थ वयं त्वरया न धा वामः सुवां आवां अहो
 रात्र अमा वास्या पूर्ण मासी अयन उत्तरा
 यन दक्षिणा यन पक्ष शुक्ल पक्ष कृष्ण
 पक्ष षट् ऋतु शिशिर वसन ग्रीष्म वर्षा
 शरत् हेमन्त शुभ चतुर्भुज सत्य त्रेता द्वा
 पर कलि वदरिका स्वयमेव दृष्ट धर्म सु
 वर्णान मनसि कर्तव्या मनुं प्रष्टुं स्थातुं गतुं
 मर्तुं वक्तुं भोजुं पातुं नक्षत्र क्षम तिति
 रिजीव जीव कुञ्च वात प्रमी रुरुचमरी
 सिता तपत्र गुच्छ सवक् कष धन गुंजा
 गुंजा फल नागराजा अनन्त तक्षक सोम
 शिखी शंखपाल सुरूप कलिक अपराल
 वन्द उपनन्द वासुकी वरुणा पद्म महा

पद्म श्री कानि असुरा घृताची मेनका रु
 म्भा नयना तिलोत्तमा सुकेशी मंजुषा बा
 उर्वशी प्रागेव भाग अंश प्रतिविभाग तत्क
 थं ननु गोचर कि न गृह्यते सूची मुखप्रेत
 तीर्थिक ऋषि अगस्त्य पुलस्त्य वैशंपायन
 सुमन जैमिनी वत्स गर्ग भृगु अंगिरा क्रा
 तु पुलह वशिष्ठ व्यास वाल्मीकि धौम्य पा
 राशर खर क्षुर क्षुरधारा श्रावक प्रत्येक
 महायान बोधितान बोधि चर्या बोधिसत्त्व
 महासत्त्व षडायतन पंचभूत पंचानन र्य
 पंचमहापाप पंचबुद्ध वैरोचन अक्षोभ्य
 रत्न संभव अमिताभ अमोघ सिद्धि गुरुत
 ल्य पंचस्कन्ध रूप वेदना संज्ञा संस्कार
 विज्ञान सप्तबुद्ध विषय श्री शिखी विश्व
 भू क्रोड चन्द्र कनक मुनि काश्यप शाक्य

सिंह अष्टवेधिसन्ध आर्यावलोकितेश्वर मै
 त्रेय गगनगंज समनभद्र वज्रपाणि मंजुश्री
 सर्वशीवरणविद्धम्भी क्षितिगर्भ स्वर्गर्भ सु
 धिंवद्धा पाणिप्रसार्य करमुद्धृत्य गरुडक
 आश्लेष उपगूढ दन्तधावन मुखशुद्धि प
 लायने तृणाशया कुशासनासीनं नूलास
 न नूल पाद क्षौम उकूल पत्र पट्ट चिह्न
 अंक लङ्घन लक्षणा तत्कस्महेतोः बालभाव
 तात् अश्वत्तात् अपखलु नोद्धिजति न सं
 त्रस्यति न संप्रासमापद्यते इष्टिका रचित
 विरचित त्रिगान इहैव प्रिय मनाप आश
 य अभिप्राय इष्ट अनिष्ट मिष्ट आदर स
 न्मान सत्कार संभेद समागम वियोग प्रवा
 सी परदेशी रोगशान्ति कियच्चिरचरितावी
 नाय्य आगम समासात् अदूर्व कुशल अ

कुशल आदीप्त जवेन वलात्कारिण प्रसाद
 क्षरामं पद् पुरुषार्थ मेघघनाभकारे बुद्धा
 उभाव सुद्यौर घोर उन्मादयति उत्तारयति
 अमितान् अम्रमेयान् असंख्ययान् अपरि
 माणान् विशीर्ण चर्चित स्फुटित भय दूय
 शोणितमक्षका शुद्धदुःख परितुक्त ईक्ष
 ण प्रत्यवेक्षणा प्रेक्षणा जीर्णवस्त्र चकोर दि
 जमुखतम खंजरीत गौधेय गौधार श्वावित्
 मुकुल कुणाल गरुडगर्त अजगर शयु
 कंचुक कवचवर्म अवशिष्ट उन्मज्जन नि
 मज्जन सेवन स्थिति प्रस्राव हतुं सेव्यमाना
 सुतरां कौटिल्य वामा वेतन मूलधन लाभद
 हर अर्भक पोत पंचत्व ममात्मयात् गाय
 क सप्रसाधितसर्वंग दक्षिणात् पाश्चिमा
 त् सर्वभक्षी प्रभूत प्रचुर वज्रल श्लोक अ

ल्याय कांदिशीक उर्मग उर्लंघ चूडामणि
 विनामणि कलावृक्ष भद्रघट वालार्क आ
 लोक संपर्क मीलन करपुट असकृत् स
 कृत् आरम्भ वैयर्थ्य नैष्कल्प क्षतनयन इ
 व बोद्धि पापहन्त्री आश्रये इहैव त्वं कर्म कु
 रुष्व माभूयो न्यत्र गमिष्यति निःशेष निष्का
 सय निवर्तय अनुग्रहायामि माविश प्रवे
 शय प्रेमय माप्रवय उपवीत यत्र सूत्र
 आकर्षण इतस्तत आक्षेप अग्निशाला अ
 यिप्रिये हेवरानने कुशलं कञ्चित् उपायत
 शाय शाल्योदन परिवेष परिधि किरण
 मयूख अंशु मरीचि चामल वंजन हरिता
 ल मनशिला अभ्रक पारद पंक्ति विंशति
 त्रिंशत् चत्वारिंशत् पंचाशत् षष्ठी सप्तति
 अशीति नवति सप्तसप्तति चतुराशति

विहाय निर्मदवल्लभ अपराध त ओष्ठ अध
 र पदाति कूलतीर प्रतीत तट पार अवार
 पाशवार दीप जगती भुवन जगत् भव जा
 त्यभ जन्माभ अत्यय अनिज्ज्ञान अर्हत् स
 म्यक्संबुद्ध विद्याचरणा संपन्न लोकविद् अ
 नुत्तर पुरुषदम्पसारथि षोडशवार्षिकावा
 ला नवयोवने स्फटिक अभ्रक मादाय उन
 न्न अधिक क्षम्यतां गद्गदस्वर तारस्वर अ
 श्रुमुख साश्रुलोचन अश्रु पूर्णलोचन अन्न
 रोक्षे अस्मात् बहू ओष्ठ वृन्द यथ सूपम
 नयक मुक्ताहार असार सार भूम्भ तुच्छ
 पित्त प्रज्ञान आसने निषणां वाजिज्ञपत् अ
 प्रायेण गृहीष्यामि नय न्याय तर्क धवला
 यते चण्डकरायते वज्रायते सूची कुलायते
 सुलिङ्गायते तिमिरायते भारायते हास

सं. ध्याये
रुग्. ध्याये

॥१५॥

सुवनकुल

हं हंत हंत हं हं. जार उपपत्ति कुरु. गो
लक. लीन संलीन सुभाय मणिमय रत्न
खचित विदित्वा कण्ठोपिता हरिः श्रियः पति
जगन्निवास जगत् शासितुं श्रीमति वसु
देवसमनि वसन् अम्बरात् अवतरन् हिर
ण्यगर्भाद्भवन् मुनिंदर्शी अनुरुसारथेः
गतः तिरश्चीनं हविर्ब्रजः उर्ध्वचक्रनं प्रसि
द्धं सर्वतो विसादिधामः अधः पतति किमेत
त्तदिति आकलनं जनैः शीक्षितं विभुः सः हरिः
पुरा विष्वाचय इति अवधारितं ततः विभा
विता कृतिः शरीरीति विभक्ता वयवं सुमा
निते अमुं जगद् नारद इति अवोधि आ
मंत्रयते स्म आरेचयति अथ मन्त्रं आदि
शत् समुपादिशत् वक्तुमर्हसि अध्वेय
स इति ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥

स त पा... ज जा
स वा... म धि
दु... म्माता
ज... पय...
स जा... म नम
वि... व क्य
सु... म नम
र... म नम
प... म नम
म... म नम

ASNA ARCHIVES

5101241111

1.284